Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवादी, दार्शनिक विचार और वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. साहेबराव झरबड़े*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय महाविद्यालय, घोड़ाडोंगरी, जिला बैतूल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय को देखते हुए लगता है कि अन्य किसी भी विषय में कितना ही लिखा जाये, कितना ही चिंतन क्यों न हो ? लेकिन भारतीय सनातन मूल्यों को उनके पुरोधा के द्वारा किये गए प्रयास को अगर उजागर न किया जाये तो बाकी सब भौतिकी प्रगति का चिंतन और विकास निरूपयोगी है। वर्तमान समय में राष्ट्र की आध्यात्मिक प्रगति की ओर प्रकाश डालें तो देखते हैं कि भारतीय युवा वर्ग कितना भौतिकवादी एवं पश्चिम के भटकाववादी संस्कृति की ओर अग्रसर हो रहा है, जिसकी परतें खोलने का प्रयास है। स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी दार्शनिक विचारों की कालजयी व्यापकता ने वास्तव में भारतीय युवाओं को भटकने से रोका है, इसमें स्कूल शिक्षा विभाग एवं उच्च शिक्षा विभाग की महती भूमिका है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में स्वामीजी के साहित्य को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है।

महाविद्यालयों में छात्रों के कैरियर एवं आध्यात्मिक, नैतिक उन्नति हेतु स्वामी विवेकानन्द कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ का गठन किया गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के भौतिक लक्ष्यों के साथ–साथ आध्यात्मिक उन्नति के प्रयास भी निहित हैं। इसके अतिरिक्त खेल गतिविधियों के साथ–साथ राष्ट्रीय सेवा योजना के गठन एवं उसके अन्तर्गत चलाई जाने वाली गतिविधियां स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन एवं लक्ष्य से जुड़ी है, जिसमें शिविर एवं समय–समय पर कार्यशाला एवं व्याख्यानमाला के माध्यम से राष्ट्रसेवा की शिक्षा प्रदान की जाती है और यही भारतीय वेदान्त का सार है, क्योंकि पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण से भारतीय युवाओं की बहुसंख्यक आबादी अपने जीवनशक्ति को तबाह करने में लगी है, जिसमें स्वामीजी के आदर्शों के साथ–साथ वर्तमान के राष्ट्रवादी संतों द्वारा भी प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तावना – स्वामी विवेकानंद का मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र के निर्माण में किसी एक तत्व की आधारभूत भूमिका होती है। भारत राष्ट्र के निर्माण में धर्म की ऐसी ही भूमिका है। स्वामी विवेकानन्द ने जिस राष्ट्रवाद की परिकल्पना की, वह धर्म पर आधारित था। वे समझते थे कि आगे चलकर धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मेरुदण्ड बनेगा। स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक पुट दिया, अत: उनके राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का सिद्धान्त भी कहा जाता है। वे भारत के लोगों में वैचारिक या आध्यात्मिक धरातल पर राष्ट्र के प्रति प्रेम या निष्ठा विकसित करने के पक्षधर थे। इसके लिए उन्होंने भारत के स्वर्णिम अतित को आधार बनाया। स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है –'राष्ट्र के रूप में हम अपना व्यक्तित्व विस्मृत कर बैठे हैं। हमें देश को उसका खोया हुआ व्यक्तित्व वापस देना है और जनता का उत्थान करना है।'

सांस्कृतिक राष्ट्रीयता – भारत विदेशी साम्राज्य के अधीन था तथा औपनिवेशिक सत्ता का उद्देश्य भारत के गौरव और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को नष्ट करना था। देश की इस कठिन घड़ी में स्वामी विवेकानन्द का अभ्युदय हुआ। स्वामी जी ने धर्म संस्कृति की महानता को जनता के सम्मुख रखा और भारतीयों को उनके अतीत व गौरव से परिचित कराकर उनमें जागृति का मंत्र फूंका। अपनी पुस्तक 'भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विकास' में बी.एन. लुनिया ने लिखा है –'देश में ही नहीं उन्होंने (स्वामी विवेकानन्द ने) विदेशों में वेदों और उपनिषदों के प्राचीन आत्मज्ञान का उद्देश्य गूंजा दिया। विश्व के सम्मुख भारतीय संस्कृति और सभ्यता की श्रेष्ठता की घोषणा से उन हिन्दूओं में नवीन शक्ति का संचार हुआ, जो पाश्चात्य सभ्यता से अपने को हेय समझते थे। उन्होंने सुदूर देशों की यात्रा करके भारी अनुभव प्राप्त किया था।

स्वतंत्रता संबंधी अवधारणा – स्वामी जी स्वतन्त्रता को मानव विकास का मूल मंत्र मानते थे, किसी वर्ग, जाति या धर्म विशेष की धरोहर नहीं। जहां जीवन है, वहां स्वतन्त्रता आवश्यक है। व्यक्ति और समाज के आत्मिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के विकास में स्वतन्त्रता आवश्यक है। उन्होंने सदा ही तथा निरन्तर इस बात पर बल दिया कि देश में स्वतन्त्रता एवं समानता हो तथा जनता को ऊपर उठाया जाना चाहिए। वह इस बात को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे कि उसे अपने शरीर, बुद्धि तथा धन को अपनी इच्छानुसार इस प्रकार प्रयोग करने दिया जाये कि दूसरे किसी को कोई हानि न हो। यह सम्भव नहीं है कि वह मनुष्य समाज व जाति और राष्ट्र उन्नति करें, जहां स्वतन्त्रता नहीं है।

राष्ट्रवाद सम्बन्धी धारणा – एक सन्त के रूप में उनका लक्ष्य सम्पूर्ण मानव जाति की सेवा था एवं देशभक्ति तथा राष्ट्रवाद की भावना भी मौजूद थी। वे भारतीय जनता को निर्धनता तथा अज्ञानता से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील रहे। उनका राष्ट्रवाद सेवा की भावना से प्रेरित था। उनके अनुसार धर्म, भारत के राष्ट्रीय हित का मुख्य अंग होना चाहिए। उनका राष्ट्रवाद आध्यात्मिकता पर आधारित था। राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक अथवा धार्मिक सिद्धान्त स्वामी विवेकानन्द की प्रमुख देन थी।

समाजवाद संबंधी धारणा – समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसरों को भोगने का अवसर मिले, इसे ही समाजवाद कहते हैं। स्वामीजी का विश्वास था कि वह राजनीतिक स्वतंत्रता निरर्थक है, जिसे भोगते हुए जनसामान्य

आर्थिक उत्थान प्राप्त न कर सके।

वैदिक परम्परा का निर्वहन – स्वामी अद्वैत वेदान्त के समर्थक थे। उनके दर्शन का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण स्रोत वैदिक परम्परा एवं वेदान्त ही थे। वेद, विश्वास उनके लिए प्राण के समान प्रिय था। स्वामी दयानन्द सरस्वती की तरह स्वामी विवेकानन्द ने भी वेद तथा वेदान्त की धारणाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के गौरव को प्रतिष्ठित किया। इसी के सहारे उन्होंने संसार के सामने भाषा, साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, इतिहास, धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में भारत को अन्य देशों की तुलना में समृद्ध दिखाया।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना – जिस प्रकार स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की, उसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने 1893 ई. में 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार तथा भारतीयों का नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान, दीन दुखियों की सेवा–सहायता करके उन्हें शिक्षित करना और ऊपर उठाना था। इसके अतिरिक्त समाज सुधार हेतु जातीय भेदभाव तथा धार्मिक अन्धविश्वासों और कुरीतियों को दूर करना था।

पाश्चात्य अन्धानुकरण का विरोध – उस समय लोग पाश्चात्य शिक्षा की खूब पैरवी करने में लगे हुए थे। भौतिक सभ्यता की ओर इतने आसक्त थे कि भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति को धीरे–धीरे भूलते जा रहे थे। स्वामीजी ने इस अन्धानुकरण का विरोध किया। उनका कथन था कि धर्म का निवास भारत के दर्शन, संस्कृति और अध्यात्म में है।

जनसेवा का समर्थन – स्वामीजी में जनसेवा का भाव प्रबल था। अभावों से ग्रस्त मानव जाति के सुखी होने तथा उनके स्वाभिमानपूर्वक जीवन के लिए हमेशा कामना रही। उनके अनुसार जनसेवा को सच्ची राष्ट्रसेवा के रूप में देखा गया। निर्धनता की समाप्ति और अच्छी शिक्षा से आत्मोन्नति का रास्ता खोलने की बात की।

जाति प्रथा सम्बन्धी विचार – समाज का जाति के आधार पर बंटवारा जो न्यायोचित नहीं था, उसे कर्म के आधार पर विभाजित करने का प्रयास किया गया। उनके अनुसार समाज को शिक्षित करके चतु:वर्ण व्यवस्था समाप्त की जा सकती है। अत: आवश्यक शिक्षा पर बल दिया। उनके अनुसार जाति प्रथा की संकीर्णताएं विलुप्त करने का एकमात्र उपाय निम्न वर्ग को शिक्षित करना है।

कर्म की प्रधानता – स्वामीजी के अनुसार व्यक्ति को सदा क्रियाशील बने रहनाचाहिए। स्वामजी का विख्यात कथन है कि 'प्रत्येक कार्य में अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करो, सभी मरेंगे, साधु या असाधु, धनी या दरिद्र सभी। अतएव उठो, जागो और तब तक रूको नहीं, जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।' स्वामीजी के अनुसार व्यक्ति को एक समय में एक ही लक्ष्य तय करके उसके प्रति समर्पित होना चाहिए। साथ ही अपने कर्म के मार्ग में साहस और निर्भिकता के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

आध्यात्मिक मानववाद के अन्तर्गत एक दृष्टिकोण था और वह यह कि 'आत्मा का संभावित दैवत्व।' उनके अनुसार यदि आत्मा के दैवत्व में कमी आती है तो यह कमी ही उसे नैतिक पतन की ओर ले जाती है। अत: हमें आत्मा की अखण्डता का अभ्यास करना चाहिए। यह अभ्यास जनसेवा के माध्यम से किया जा सकता है।

वर्तमान में प्रासंगिकता – स्वामी विवेकानन्द का दर्शन कर्म का आह्वान करता है। उनका चुम्बकत्व चिन्तक के लिए नहीं वरन् कर्मशील मनुष्य के लिए है। स्वामी विवेकानन्द एवं दयानंद सरस्वती जैसे महान् समाजसेवी, क्रान्तिकारी संतों एवं भारतीय संस्कृति की गौरवमयी धरोहर, प्राचीन धार्मिक, वैदिक साहित्य का प्रभाव आज भी उसी कलेवर के साथ वर्तमान समय के संतों में देखा जा सकता है। स्वामी अनिरूद्धाचार्य, संत श्री धीरेन्द्र शास्त्री, अवधेशानंद गिरी महाराज और सबसे अधिक प्रबल और प्रभावी संत प्रेमानंद महाराज के संकल्प और साधना को देखा जा सकता है।

भारत के वर्तमान समय के इन राष्ट्रवादी संतों के द्वारा भी नैतिक मूल्यों को तरासने के साथ–साथ राष्ट्रप्रेम (राष्ट्रवाद) का भाव प्रबल रूप से जाग्रत किया जा रहा है। स्वामी विवेकानन्द एवं दयानंद सरस्वती की शिक्षा कर्मयोग एवं राष्ट्रप्रेम का स्वरूप वर्तमान के बहुचर्चित आत्मज्ञानी भगवत प्राप्त संत प्रेमानंदजी में देखा जा सकता है। वे भी शास्त्रानुकूल एवं स्वामीजी के सिद्धान्त और आदर्शों के अनुरूप ही मानवमात्र के कल्याण की शिक्षा देने के साथ–साथ प्राणों की बाजी लगाकर भी राष्ट्रसेवा पर बल देते हैं। वर्तमान समय में जिस प्रकार भारत देश में पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया जा रहा है और उसकी विकृति का सामना करना पड़ रहा है, जैसे स्वतंत्रता के नाम पर विवाह के पूर्व नवयुवकों–युवतियों के द्वारा दोस्ती को आधार बनाकर साथ में रहना और फिर सम्बन्ध विच्छेद होना, यह भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रों के अनुकूल बिल्कुल भी नहीं है, लेकिन फिर भी इस प्रकार की संस्कृति हावी होते चली आ रही है। ऐसे समय में भी हमारे राष्ट्रीय संतों के द्वारा शास्त्रीय पद्धति एवं गौरवमयी इतिहास के उदाहरण देकर भटकते हुए युवाओं को नि:स्वार्थ मानव सेवा एवं राष्ट्रप्रेम की शिक्षा देकर राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। अत: स्वामी विवेकानन्द के विचार निश्चित रूप से कालजयी एवं जीवन उपयोगी हैं।

निष्कर्ष – स्वामी विवेकानन्द के द्वारा जो मानव मूल्यों को आत्मसात करके राष्ट्रप्रेम की शिक्षा दी गई, जिस प्रकार से स्वतंत्रता को परिभाषित किया। राष्ट्रवाद के स्वरूप को जिस प्रकार मानव जाति की सेवा के साथ जोड़ा, वैदिक परम्परा को जिस प्रकार अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास किया, अस्पृश्यता एवं जातिवाद को उन्होंने परिष्कृत रूप से उजागर किया और इन सबके पीछे उनका कर्मयोग का सिद्धान्त स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है और यह कालजयी सिद्धान्त आज भी शास्त्र अनुकूल और सामयिक है, जिसको वर्तमान राष्ट्रीय संतों के द्वारा उल्लेखित करके भटके नवजवानों को सही राह पर लाया जा रहा है। लाखों की संख्या में नवयुवक एवं सामान्य जनसमुदाय प्रत्यक्ष राष्ट्रीय संतों के सानिध्य में जाकर एवं सामाजिक जनसंचार के माध्यम से अपने जीवन में बदलाव लाकर अपने को मानव सेवा एवं राष्ट्रप्रेम से जोड़ रहे हैं अर्थात् श्रीमद्भगवदगीता के कर्मयोग को स्वामी विवेकानन्द एवं समकालीन आधुनिककाल के संतों के द्वारा आत्मसात किया और लोगों को शिक्षा प्रदान कर जनकल्याण किया और तत्कालीन राष्ट्रीय संतों के द्वारा भी हमारी आध्यात्मिक, साहित्यिक धरोहर को लोककल्याण हेतु उजागर किया एवं लाखों लोग हमारे गौरवमयी वैदिक साहित्य को आत्मसात कर राष्ट्र एवं स्वयं के जीवन का उद्धार कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. सिंह सर्वेश – दार्शनिक विचारक एवं सामाजिक सुधारक, 2015.
2. सतीश के. कपूर – सांस्कृतिक संपर्क और सम्मिश्रण : पश्चिम में स्वामी विवेकानन्द, 1893.
3. प्रो. पटेल किशोर – नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं मनोवृत्ति।
4. एस.वी. भारती – स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन।
5. चौधरी एस.के. – महान राजनीतिक विचारक : स्वामी विवेकानन्द।
6. शर्मा जी. रंजीत – स्वामी विवेकानन्द का आदर्शवादी दर्शन।
7. सिंह शैल कुमारी – स्वामी विवेकानन्द का धार्मिक और नैतिक दर्शन।
8. गुप्ता सुबोधचन्द्र सेन – स्वामी विवेकानन्द और भारतीय राष्ट्रवाद।